दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

□ वर्ष 63 □ अंक–23 □ दिल्ली □ सितम्बर (प्रथम) □ मूल्य : 2 रु.

भारतीय संविधान और इसके रचयिता महान शिल्पी डा. भीमराव अम्बेडकर

• आचार्य गुरू प्रसाद

15 अगस्त, 1947 को भारत अंग्रेजी साम्राज्य से मुक्त हुआ और संविधान सभा का गठन 9 दिसम्बर 1946 को डा. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में हुआ। संविधान सभा ने 29 अगस्त, 1947 को संविधान प्रारूप कमेटी का गठन बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में किया। डा. अम्बेडकर पहले से ही पंडित जवाहरलाल नेहरू वाले मंत्रिमंडल में 3 अगस्त, 1947 से ही एक कानून मंत्री के रूप में शामिल थे। संविधान का प्रारूप 14 नवम्बर, 1949 को पूर्ण हुआ। भारत की संविधान सभा ने 26 नवम्बर, 1949 को इस पर अपनी मंजूरी की मुहर लगा दी। अन्ततः भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।

भारतीय संविधान हमारे देश का मौलिक सर्वोच्च कानून है और यह हमारे सामाजिक जीवन की लगभग सभी विधाओं में लागू होता है। इस संविधान के तहत ही भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य के रूप में गठित हुआ और एक शपथ ली गई कि ''भारत अनुसूचित जातियों तथा अन्य समाज के कमजोर अंगों, जिन्हें जानबूझकर न्याय, आजादी और समानता से युगों युगों से वंचित रखा गया था उन्हें वे अधिकार दिये जायेंगे। यह संविधान समाज के कमजोर अंगों के एकमात्र मुक्तिदाता एवं नेता बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर द्वारा ही निर्मित हुआ था। बाबा साहब डा. अम्बेडकरने जीवनपर्यन्त भारत के तथाकथित अछूतों को समाज के उच्च कहलाने वाले लोगों के समान बनाने का प्रयत्न किया तथा उन्हें देश की राष्ट्रीय मुख्य धारा के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने एक ऐसे भारत की कल्पना की थी जिसमें बसने वाला समाज स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय के विषय में सभी प्रकार से समान हो। संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष के नाते उनके हृदय के उद्गार भारतीय संविधान में अंकित हैं। यही बात ध्यान देने योग्य है कि संविधान में उन्होंने अपने साथी सदस्यों के विचार तथा निर्णयों को भी उचित स्थान दिया है।

अतः यह परमावश्यक है कि प्रत्येक भारतीय नागरिक को भारतीय संविधान के प्रावधानों का अध्ययन संविधान के शब्दों एवं भावनाओं को हृदयंगम करके करना चाहिये।

भारतीय संविधान का दर्शन

भारतीय संविधान में उसके हृदय के रूप में जो प्रस्तावना लिखी है उसमें उसका समूचा दर्शन निहित है जो शपथ के रूप में स्पष्ट होता है।

''हम, भारत के लोग शपथपूर्वक घोषणा करते हैं कि भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष प्रजातान्त्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके सभी नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्र प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी संवत् दो हजार छः विक्रमी) को एतत्द्वारा संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

जब एशिया उपमहाद्वीप के इस महान देश भारत का संविधान सम्पूर्णता की ओर बढ़ रहा था तो संविधान सभा के सदस्यों ने दिन प्रतिदिन, मास प्रतिमास, वर्ष प्रति वर्ष भारत के निर्मित होते हुए संविधान के निर्माता बाबा साहब डा. बी. आर. अम्बेडकर के प्रति अपनी विविध भावनाओं से युक्त अपने हार्दिक उद्गारों के अर्घ्यों की बौछार सी लगा दी थी।

बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर राष्ट्र के उत्कृष्ट नेताओं में से एक थे जिन्होंने भारत की नीतियों को हमारी आजादी के आने वाले समय के लिये एक नया स्वरूप प्रदान किया है। वे विचारक हैं, क्रान्तिकारी हैं और मानवीय अधिकारों और मानवीय सम्मान के प्रबल पक्षधर हैं। हमारे संविधान के मुख्य शिल्पी होने के नाते उन्होंने हमारी संसदीय संस्थाओं का सुसंगत निर्माण किया है तथा उन्हें सुदृढ़ता प्रदान की है। उनका यह विश्वास

(शेष भाग... पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय

आओ, 21वीं सदी को अपनी सदी बनायें

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

आप जानते ही हैं कि 19वीं सदी देश के दलितों के लिए जहां गुलामी और शोषण की रही, वहीं 20वीं सदी दलितों के लिए नव जागरण और जनचेतना की रही। इसके पीछे हम महात्मा ज्योतिराव फुले, शाहूजी महाराज, स्वामी अछूतानन्द, स्वामी पेरियार, बाबू मंगू राम, श्री हरिप्रसाद टम्टा आदि के प्रारम्भिक सामाजिक कार्यों को मानते हैं जिन्होंने अपने पूर्ववर्ती संत गुरु रविदास, संत कबीर, गुरु घासीदास, संत तिरुवल्लुर आदि से प्रेरणा लेकर सामाजिक समता व दलित चेतना के लिए अपने–अपने क्षेत्रों में शंखनाद किया। बाबा साहब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने इन सभी के सामूहिक प्रयासों की सराहना करते हुए दलित और शोषितों को सदियों से ब्राह्मणवादी मनुस्मृति द्वारा छीने गये उनके अधिकारों से अवगत कराया और साथ ही देश की सत्ता और सम्पदा में अपनी हिस्सेदारी बराबरी की प्राप्ति के लिए संघर्ष का मार्ग दिखाया और नासिक के महाड़ तालाब और कालाराम मंदिर में दलितों के प्रवेश के अधिकार दिलाने के लिए स्वयं आन्दोलन कर संघर्ष की शुरुआत की। इसके बाद पूना पैक्ट के आधीन दलितों को नौकरी, शिक्षा और निर्वाचन में आरक्षण का संवैधानिक अधिकार दिलवाया। उन्होंने दलितों को समता, न्याय, स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों को भारतीय संविधान में शामिल कर 20वीं सदी का एक सबसे महान कार्य किया जिसके आधार पर एक महारानी और एक मेहतरानी दोनों को बराबरी का एक ही वोट का संवैधानिक अधिकार दिया गया। बीती दो सहस्राब्दियों में बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर अकेले एक ऐसे विराट पुरुष हैं जिन्होंने अपनी विद्वता, अथक प्रयास, कठोर परिश्रम और निर्भीकता के साथ सदियों से अपने अधिकारों से वंचित दलित शोषितों को अन्य सवर्ण–उच्च वर्गों के समान समानता, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के साथ जीने के अधिकार दिलाये।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने दलितों का मार्गदर्शन किया कि जब तक वे हिन्दू हैं, तब तक उन्हें 'अस्पृश्यता' और दोयम नागरिकता का अभिशाप सहन करना पड़ेगा। अतः हिन्दू धर्म से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने समतावादी बौद्धधर्म की न केवल स्वयं दीक्षा ली, बल्कि लाखों दलितों को बौद्ध धर्म में प्रवेश कराया। इस तरह उन्होंने सदियों से हिन्दू धर्म की कीचड़ में फंसे दलित–शोषितों को मानवतावादी 'बौद्ध धर्म' दिया। इस तरह उन्होंने अमानवीय हिन्दू धर्म से छुटकारे का मार्ग दिखाया।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के अन्दर से संकीर्णता और भीरूपन निकालने के लिए वैचारिक क्रांति फूंकने के लिए ब्राह्मणवादी साहित्य के समानान्तर दलित साहित्य का मार्ग प्रशस्त किया । इस तरह उन्होंने क्रांतिकारी दलित साहित्य संरचना की प्रेरणा दी। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का 6 दिसम्बर, 1956 को महापरि–निर्वाण हो गया। बाबा साहब अपने कारवां को आगे ले जाने की प्रेरणा

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार—मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य—दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म—गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

देकर मार्ग प्रशस्त कर सदा की नींद सो गये ।

भारत की राजनीति में दलितों के दो धुरन्दर नेता थे एक बाबा साहब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, और दूसरे बाबू जगजीवन राम। दोनों को सवर्ण नेताओं ने सदा भिड़ाने और पाड़ लगाये रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हालांकि राजनैतिक सोच अलग–अलग होते हुए भी दोनों एक–दूसरे का सम्मान करते थे और दलित समस्याओं पर परस्पर विचार विमर्श करते और उन्हें सरकार के सामने रखने में एक–दूसरे का सहयोग करते थे। केन्द्रीय मंत्री के रूप में बाबू जगजीवन राम जी के हवाई–दुघर्टना में घायल हो जाने पर स्वयं बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर उनका हाल पूछने उनके निवास पर गये। इसी तरह भारतीय संविधान के निर्माण के समय भी बाबा साहब ने कई बार उनसे विचार–विमर्श किया और भारतीय संविधान को संसद में पास कराने में भी बाबू जी का सहयोग लिया। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण की खबर लगते ही उनके निवास पर बाबू जगजीवनराम सबसे पहले पहुंचने वाले नेता थे। उन्होंने स्वयं खड़े होकर बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की शव यात्रा की तैयारी कराई। रविदास जन्मोत्सव कमेटी, दिल्ली के कार्यकर्ताओं को बाबा साहब के शव को पूरे सम्मान के साथ जलूस के रूप में 26 अलीपुर रोड़ से पालम हवाई अड्डे तक ले जाने और फिर हवाई जहाज द्वारा मुम्बई पहुंचाने तक की खुद व्यवस्था कराई। बाबू जी ने उस समय कहा था कि बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के बिना मैं आज एक अपंग हो गया हूं। वे एक वटवृक्ष थे जिसकी सघन छाया का लाभ पूरे समाज को मिल रहा था। आज उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का हमें संकल्प लेना होगा।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण के बाद उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का बीड़ा बाबूजी ने उठाया। सरकार से संविधान प्रदत्त आरक्षण को लागू कराने का कार्य तेजी के साथ शुरू किया। सरकारी नौकरियों में दलितों का आरक्षण कोटा पूरा होने लगा और पदोन्नति होने लगी। बाबू जी के पास सरकार का जो भी मंत्रालय रहा, उसमें उन्होंने सबसे पहले आरक्षण कोटा पूरा कराया। श्रम मंत्री के रूप में दलितोत्थान के लिए उन्होंने अनेक कानून बनाये। रेल मंत्री के रूप में उन्होंने जहां सभी पदों पर आरक्षण कोटा पूरा किया वहां प्रत्येक स्टेशन पर पानी पिलाने वाले पद पर दलित बाल्मीकि महिला को नियुक्ति अनिवार्य कर दी, और दलित वर्ग संघ के माध्यम से देश में समता और सम्मान का नारा फूंका। बाबा साहब के बाद बाबू जी ने समता का संघर्ष तेज किया। 1981 में जब मिनाक्षीपुरम में दलितों ने धर्म परिवर्तन किया तो जहां हिन्दू धर्म के नेताओं ने इसके विरोध में 'विराट हिन्दू सम्मेलन' किया तो बाबू जी ने उसके समर्थन में उसी दिन नई दिल्ली में 'विराट जागृति सम्मेलन' आयोजित किया जहां ब्राह्मणवाद का पुतला फूंका गया। इससे 'धर्म परिवर्तन' को बल मिला और दलितों में ब्राह्मणवाद के खिलाफ चेतना जागृत होने लगी।

इसके बाद तो बाबू जी ने सारे देश में अम्बेडकरवाद का शंखनाद करते हुए कहा कि बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने भारत का जो नक्शा बनाया है उसमें रंग भरने का कार्य हम कर रहे हैं। हमें इस देश में ब्राह्मणवाद को खत्म करके ही दम लेना है। दलितों को अब हिन्दू धर्म के भ्रम जाल में फंसा कर नहीं रखा जा सकता। उन्हें समता का अधिकार देना होगा। आबादी के हिसाब से हर चौथी चीज दलितों के हिस्से की है। उनके हिस्से पर धर्म के नाम पर अब और ज्यादा दिन कब्जा करके नहीं बैठा सकता।" बाबा साहब के बाद उनके कार्यों को आगे बढ़ाकर साकार करने का काम बाबू जी ने सच्चे मन से किया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की 1984 में स्थापना करते हुए बाबू जी ने आशा व्यक्त की थी कि ''दलितों के अन्दर जन चेतना के माध्यम से वैचारिक क्रांति फूंकने का कार्य अब अकादमी के माध्यम से होगा। यह अकादमी अब दलितों के सच्चे इतिहास को खोज कर एक ओर जहां उनकी संकीर्णता और दब्बूपन को दूर कर उनमें स्वाभिमान और निडरता का संचार करेगी, वहीं दलितों के अधिकारों की लड़ाई को लड़ने की पृष्ठ भूमि तैयार करेगी। इससे बाबा साहब का कारवां आगे बढ़ेगा और उनका सपना पूरा होगा।''

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने अपनी स्थापना से अब तक 40 वर्षों में 40 राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन नई दिल्ली में और दो विश्व दलित साहित्यकार सम्मेलन नेपाल व यू.के. (इंग्लैंड) में आयोजित किये। इस तरह बिना सरकारी या गैरसरकारी अनुदान या सहयोग से अकादमी ने सन् 2024 तक अपने राष्ट्रीय सम्मेलन एवं विश्व सम्मेलन आयोजित करने के संकल्प पूरे किये। इससे जहां देश के 'हर घर' और 'हर नर' तक बाबा साहब के सन्देश को अकादमी ने पहुंचाया है, वहीं वैचारिक क्रांति द्वारा उनके मिशन को राष्ट्रीय स्तर से आगे विश्व स्तर तक पहुंचाया है।

1930 में बाबा साहब ने राउंड टेबुल कान्फ्रेंस, लंदन में दलितों के अधिकारों की जो बात उठाई थी, उसके 70 वर्ष बाद पुनः लन्दन में अकादमी ने अपने द्वितीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में दलित अधिकारों की उन्हीं मागों की फिर से अनुगूंज करके विश्व के मानवतावादियों का ध्यान आकर्षित करने में सफलता पाई। पहली बार इस सम्मेलन में भारत के विभिन्न राज्यों के 300 दलित विद्वानों ने भाग लिया। यह एक ऐतिहासिक घटना है जब इतने दलित विद्वानों ने अपने शोधपत्रों के माध्यम से दलितों की समस्याओं को विश्व मंच पर उजागर किया।

अकादमी गैर–राजनैतिक, साहित्यिक–सामाजिक संस्था है जिसका किसी भी राजनीतिक दल से संबंध नहीं है और न ही हम सत्ता के दलाल हैं। हम तो सीधे–सीधे मानवतावादी है और सदियों से सत्ता और अधिकारों से वंचित दलित, शोषितों को उनके अधिकार

दिलाना चाहते हैं । इसीलिए उनकी चेतना जाग्रत करके उन्हें संवेदनशील बना रहे हैं ताकि अपने अधिकार प्राप्ति के लिए वे संघर्षशील हो जाएं।

आज पूरे देश में राज्य स्तर से जिला व तहसील स्तर तक अकादमी की शाखायें कार्यरत हैं जिनसे विभिन्न भाषाओं के 20 हजार से ज्यादा दलित लेखक, पत्रकार, कलाकार और समाज सेवी जुटे हैं जो बाबा साहब के संदेश को हर गांव के हर घर तक फैलाने में कार्यरत हैं। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का मिशन हमारे सामने है। हम उनके बताये मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं बिना किसी सरकारी अनुदान के। समतावादी महात्मा बुद्ध का अमर संदेश 'अत्तो दीपो भव' अकादमी का मूलमंत्र है। हमारा दलित समाज दर्जनों जातियों का समूह है। उन सबको साथ लेकर चलने से ही दलित संगठन मजबूत होगा। इसीलिए अकादमी गुरु रविदास, संत कबीर और महर्षि वाल्मीकि, संत तिरुवल्लुवर के नाम पर राष्ट्रीय पुरस्कार देकर इन समाज के लोगों को एकजुट करने में लगी है। यही बाबा साहब का कहना था। बाबू जगजीवन राम अकादमी के संस्थापक एवं दिशा निदेशक हैं, बाबा साहब डा. अम्बेडकर के सपनों को. पूरा करने की उन्होंने ही प्रेरणा दी थी। उन्हें बाबा साहब का विरोधी कहना नासमझी है। जो लोग दलितोत्थान कार्य में में जुटे हैं और जिनकी भावनाएं समतावादी समाज निर्माण में लगी है उन्हें अकादमी अपने मंच पर पुरस्कृत करके प्रोत्साहित करती हैं, क्योंकि वे भी अकादमी की उद्देश्यपूर्ति में जुटे हैं। अगर हम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या किसी अन्य मंत्री को अपने सम्मेलन में बुलाते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम सवर्ण या किसी ब्राह्मण को सत्कार के लिए बुला रहे हैं। हम तो उन्हें दलितों के समस्याओं और उन पर हुये उत्पीड़न, प्रताड़न एवं अमानवीय व्यवहार से अवगत कराने और इस विषय में उनके सवर्ण समाज के विचार बदलने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारे राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. शंकरदयाल शर्मा को राष्ट्रपति होने के नाते तथा श्री अटल विहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री होने के नाते मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इससे दलित समाज का अहित होने के अपेक्षा, हित ही हुआ है। इससे दलितों की विशाल हृदयता का परिचय मिलता है।

हम समझते हैं कि हमारे दलित समाज के कुछ पढ़े–लिखे लोग 'दोहरी जिंदगी जी रहे हैं और मन, वचन और कर्म से भी वे एक नहीं हैं। न तो वे बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के मिशन को अभी तक समझ सके हैं, न ही अपने महापुरुषों के विषय में उन्होंने कोई मंथन किया है और न ही महात्मा बुद्ध के दर्शन को उन्होंने अच्छी तरह समझा है। इसीलिए उनकी करनी और 'कथनी' में अंतर है, रहन–सहन और दिखावे में अंतर है। इसलिए वे दलित समाज को तो धोखा दे ही रहे हैं, अपने दलित परिवार को धोखा दे रहे हैं और अपने दलित भाइयों को भी धोखा दे रहे हैं। हम ऐसे लोगों से पूछना चाहते हैं कि दलितोत्थान के लिए, दलितों के विकास के लिए एवं दलितों के कल्याण के लिए अभी तक उन्होंने क्या किया है? कितने दलित बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए आर्थिक सहयोग दिया है? दलित संगठन को मजबूत करने के लिए कितनी सभा, गोष्ठी एवं सम्मेलन आयोजित किये हैं? कितने दलित युवकों का मार्ग दर्शन करके उन्हें रोजगार उन्मुख किया है? दलित समाज के उत्थान में संलग्न कितनी सामाजिक संस्थाओं तथा समाचार पत्रों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया है? कितने अनाथ, बेसहारा, उपेक्षित एवं शोषित लोगों को सहायता करके उन्हें नया जीवन प्रदान किया है? दलित समाज के कितने लोगों में चेतना जागृत करके उन्हें बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के मिशन से जोड़ा है और कितने लोगों को महात्मा बुद्ध के बौद्ध धर्म की दीक्षा दिलायी है? इसके अलावा कितने अम्बेडकर भवन, बौद्ध बिहार या अन्य शिक्षण संस्थानों की स्थापना में सहयोग प्रदान किया है? इन सब बातों पर विचार करने से यह स्पष्ट होगा कि दलित समाज के अधिकांश शिक्षित लोग केवल अपने एवं अपने परिवार के उत्थान में लगे हैं। उन्हें दलित समाज के अन्य लोगों से कुछ लेना–देना नहीं है। और जो लोग दलित समाज के उत्थान एवं जन चेतना जागृत करने में लगे हैं, उन्हें ये लोग व्यर्थ में ही अपना दुश्मन समझते हैं जबकि उन संस्थाओं और उनके पदाधिकारियों को ऐसे नकारा दलित शिक्षित वर्ग के लोगों से कुछ लेना–देना नहीं है। क्योंकि ऐसे लोगों से तो बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर जैसे महापुरुष पहले ही बहुत दुखी हो चुके थे। तभी तो उन्होंने कहा था कि ''मुझे सबसे ज्यादा धोखा दलित समाज के पढ़े–लिखे लोगों ने दिया है। मुझे ऐसे लोगों से विश्वास उठ गया है। इसीलिए मैं चाहता हूं कि दलितोत्थान का मेरा यह कारवां अगर आगे भी न जा सके, तो इसे पीछे जाने से तो रोका जाना चाहिये।''

हम बाबा साहब के इस कारवां को दलित समाज के ऐसे पढ़े–लिखे, ना समझ लोगों की परवाह न करते हुए, आगे ले जाने लिए कृत संकल्प हैं और पिछले 40 वर्षों से उनके सपनों को साकार करने में लगे हैं। इसमें सरकार से चाहे कोई सहायता मिले या न मिले, सवर्ण समाज के लोग कितने ही विरोध करें, या फिर अपने ही पढ़े–लिखे लोग हमारी टांग खिंचाई करें तब भी भारतीय दलित साहित्य अकादमी का यह कारवां 1984 से बाबा साहब के मिशन को निरंतर आगे ले जा रहा है, न केवल भारत में, अपितु पूर्ण विश्व में, उनके मानवता के संदेश को गूंजा रहा है।

हम बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर, बाबू जगजीवन राम और अपने गुरुओं और संतों से प्रेरणा लेकर जिस दिशा में जा रहे हैं, विभिन्न मतों और धार्मिक विचारवालों को एक 'अम्बेडकर मंच' पर ला रहे हैं और सभी को हिन्दू धर्म की गली सड़ी व्यवस्था के खिलाफ लामबन्द कर रहे हैं, वह नई 21वीं सदी में एक नया रंग लायेगी। स्वामी

विवेकानन्द ने कहा था कि अगर हिन्दुओं ने शूद्रों (दलितों) के महत्व को समझकर उन्हें उनके अधिकार नहीं दिये तो वे अपने अधिकार बलपूर्वक छीन लेंगे, और आने वाली 21वीं सदी 'दलितों की सदी' होगी। आइये हम सब एकजुट होकर चलें एकजुट होकर सोंचे, और एकजुट होकर संघर्ष करें ताकि सत्ता—सम्पदा में अपनी बराबरी की हिस्सेदारी लेकर और अपने छीने अधिकारों को हासिल कर, हम 21वीं सदी को अपनी सदी बना सकें। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें—

सम्पादक :

हिमायती

बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

मो. 9810278936

पृष्ठ 1 का शेष...भारतीय संविधान और इसके रचयिता महान शिल्पी डा. भीमराव अम्बेडकर

था कि ये संस्थायें सामाजिक नव निर्माण की केन्द्रबिन्दु हैं जो करोड़ों—करोड़ों दुखित पीड़ित लोगों के लिये एक सुखद सुन्दर भविष्य दे सकेंगी।

वे **महान प्रजातांत्रिक** थे जो पूर्णतः विश्वास रखते थे कि प्रजातंत्र का अर्थ एक ऐसे शासन से है जो लोगों के आर्थिक और सामाजिक जीवन में बिना किसी बल प्रयोग एवं रक्तपात के एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकेगा। इसीलिये उन्होंने लोगों से संवैधानिक मार्ग को ही अपनाने का सद् आग्रह किया था और क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन के लिये हिंसा के मार्ग का सर्वथा विरोध किया था। समाज में व्याप्त असमानताओं को मिटाने के लिये क्रान्तिकारी परिवर्तनों को मूर्तरूप देने में जान बूझकर जो विलम्ब हो रहा है उसका पूर्वाभास करते हुए उन्होंने 25 नवम्बर 1949 की संविधान सभा में राष्ट्र को चेतावनी देते हुए कहा था कि हमें यह असमानतायें जल्दी से जल्दी समय में मिटा देनी चाहिये अन्यथा जो आज असमानताओं से पीड़ित हैं वे कल इस राजनैतिक प्रजातन्त्र के कलेवर को ध्वस्त कर देंगे जिसे बड़े ही कठिन परिश्रम से इस संविधान सभा ने बनाया है।

उन्होंने राष्ट्र को पुनः चेतावनी देते हुए पूछा कि क्या भारतीय जन—मानस अपने देश को अपने धार्मिक मान्यताओं से ऊपर मानेंगे या अपनी धार्मिक मान्यताओं को देश के ऊपर मानेंगे? यह तो मैं नहीं जानता किन्तु यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि यदि राजनैतिक पार्टियां अपनी धार्मिक मान्यतायें देश के ऊपर मानेंगे तो हमारी स्वतन्त्रता को पुनः खतरा पैदा हो जायेगा और हो सकता है कि वह हमारे से सदा के लिये छिन जाये। इसलिये हमें हर हालत में इसकी रक्षा करनी होगी। हमें हमारी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये अपने रक्त की आखिरी बूंद तक कृत संकल्प होना पड़ेगा।

एक **अर्थशास्त्री, विधिवेत्ता और समाजशास्त्री** होने के नाते डा. भीम राव अम्बेडकर भली भांति जानते थे कि संविधान महज एक कानूनी पुर्जा नहीं है बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक अभिलेख है जिसमें करोड़ों लोगों की आकांक्षाओं, पीड़ाओं, आशाओं और आवश्यकताओं का आलेख है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपनी विद्वता के प्रभाव का पूर्ण प्रयोग करते हुए भारतीय गणतन्त्र का संसदीय संविधान निर्मित किया। राष्ट्र उनकी देशभक्ति की अपूर्व सेवाओं के लिये हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता है और हर गणतन्त्र दिवस पर पीड़ित मानव जाति के प्रति उनकी सेवाओं के लिये नमन करता है।

भारतीय संविधान के जनक

संविधान के मसौदा (प्रारूप) कमेटी के मनोनीत सदस्य श्री टी. टी. कृष्णमाचारी ने 4.11.1948 को इन्हें **भारतीय संविधान के पिता** कह कर उन्हें सम्मानित किया था और अपने कथन को न्यायोचित यह कहकर ठहराया था—''यह सभा संभवतः यह जानती है कि सात महानुभावों को आप के द्वारा इस कमेटी में मनोनीत किया गया था। एक महानुभाव ने सभा से त्यागपत्र दे दिया उसके स्थान पर कोई मनोनीत नहीं हुआ। दूसरे महानुभाव काल कवलित हो गये उनके स्थान पर भी कोई मनोनीत नहीं हुआ। एक महापुरुष अमेरीका चले गये और उनके स्थान की भी पूर्ति नहीं हुई, एक महापुरुष रियासती मामलों में उलझे रहे। यहां तक कि एक या दो महानुभाव दिल्ली से बाहर चले गये। संभवतः स्वास्थ्य के कारण वे संविधान सभा में उपस्थित ही नहीं रहे। अन्ततः यह हुआ कि संविधान के मसौदे (प्रारूप) का सम्पूर्ण भार डाक्टर अम्बेडकर के कंधों पर आ गया। और निःसंदेह हम उनके कृतज्ञ हैं कि उन्होंने यह कार्य इस सुचारू ढंग से पूर्ण किया है जो बिना किसी संदेह के अत्यन्त प्रशंसनीय है।''

(कान्सीचुऐन्ट एसेम्बलीडिवेट्स जिल्द 8 पेज 231)

दलित जातियों के संरक्षक

श्री एस. नागप्पा ने 21.11.49 को अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए व्यक्त किया—"यदि दलित जातियों के दृष्टिकोण को देखा जाय तो उन्हें उनके ध्येय उसी दिन प्राप्त हो गये थे जिस दिन डॉ. अम्बेडकर का निर्वाचन संविधान की मसौदा कमेटी के अध्यक्ष के रूप में हुआ था। वे दलित जाति के लोगों के अत्यन्त सचेत कल्याणकारी नेता है। वे तब अध्यक्ष चुने गये जबकि कई अन्य दलित सदस्य उनको सहयोग करना नहीं चाह रहे थे। इसलिये नहीं कि वे उन्हें सहयोग देना नहीं चाह रहे थे बल्कि वे जानते थे कि डॉ. अम्बेडकर उनके हितों की रक्षा के लिये और ऐसे प्रावधान करने के लिये सक्षम है जो अनुसूचित जातियों के हितों की रक्षा करने में भी पूर्णतः सक्षम है तथा जो हमारे बूते से बाहर हैं हम उनकी ऊंचाई नहीं छू सकते हैं।

डॉ. अम्बेडबर हालांकि स्वयं अनुसूचित जाति के हैं किन्तु यदि उन्हें अवसर दिया गया तो वे बहुत उन्नति करेंगे। उन्होंने अपनी विद्वता को सिद्ध कर दिया है कि किस प्रकार उन्होंने संविधान का प्रारूप तैयार किया है और किस प्रकार इस कार्य में अग्रभाग लिया है। अब मैं सोचता हूं कि अनुसूचित जातियों पर जो यह अयोग्यता का कलंक लगा है वह धुल जायेगा और यह सिद्ध हो जायेगा कि वे अन्य लोगों से अधिक योग्य हैं। और उनके इस महान कार्य के लिये मैं अनुसूचित जातियों की ओर से उनका अभिनन्दन करता हूं। यह अनुसूचित जातियों की शक्ति नहीं थी कि उन्हें संविधान की मसोदा समिति का अध्यक्ष बना दिया गया है, बल्कि यह बहुसंख्यकों की कृतज्ञता है। अतः मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं।''

एक स्मरणीय दस्तावेज

5.11.48 को श्री फ्रेंक अन्थोनी ने कहा– ''मैं डॉ. अम्बेडकर को बधाई देता हूं कि उन्होंने संविधान के मसौदे में भारत के मूल सिद्धान्तों के महत्वपूर्ण विश्लेषण किये हैं भले ही हम उनके प्रति कुछ भी विचार रखते हों। मेरा विश्वास है कि उनका यह कार्य एक यादगार दस्तावेज के रूप में कम से कम भौतिक दृष्टि से तो माना ही जायेगा यदि कोई और दृष्टिकोण नहीं है तो।''

(सी.ए.डी. जिल्द 7 पेज 227)

विद्वतापूर्ण विश्लेषण

उसी दिन श्री विश्वनाथदास ने कहा–''श्रीमान् मैं डॉ. अम्बेडकर को उनके संविधान के अपूर्व विश्लेषण के लिये जो उन्होंने संविधान सभा में प्रस्तुत किया है, बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं।''

(वही पेज 237)

अद्‌भुत कार्य सम्पादन

उसी दिन श्री लक्ष्मीकान्त मैत्रा ने कहा–''श्रीमान् मैं अपने कृत्य से विमुख हो जाऊंगा यदि मैं डा. अम्बेडकर, जो मेरे आदरणीय मित्र तथा पुराने साथी हैं, को उनके इस अद्‌भुत कार्य सम्पादन के लिये अभिनन्दन न करूं। यह सदन डॉ. अम्बेडकर के द्वारा संवैधानिक गुत्थियों को सुलझाने और उन्हें सही रूप देने में उनकी अथक शक्ति और विशाल समय लगाने की भूरि–भूरि प्रशंसा करता हैं।''

(वही पेज 237)

संविधान का प्रभावी दिग्दर्शन

उसी दिन डॉ. पी. एस. देशमुख ने कहा–''डा. अम्बेडकर के द्वारा दिया गया अभिभाषण अत्यन्त प्रभावशाली था। वस्तुतः यह आज प्रस्तुत किये गये संविधान पर एक प्रभावी व्याख्या थी। आप सभी जानते हैं कि वो एक विख्यात वक्ता हैं और मेरा विचार है कि वे जो कुछ भी उनके समक्ष है, उस पर तर्क वितर्क करने की क्षमता रखते हैं। वे इस संविधान को किसी और रूप से प्रस्तुत कर सकते थे यदि ऐसा कर सकते। कुछ भी हो वे अपनी कठिनाइयां स्वयं पूर्णतः स्वीकारते हैं जब वे कहते हैं कि आखिर आप एक दिन में सारी शासन प्रणाली नहीं बदल सकते।''

(वही पेज 250)

संविधान में कांग्रेस की विचारधारा के चिन्ह नहीं

उसी दिन श्री अरुण चन्द्र गुप्ता ने कहा–''समूचे के समूचे संविधान में हमें कांग्रेस की विचारधारा नहीं मिलती। ना ही कोई चिन्ह इसमें गांधीवादी सामाजिक और राजनैतिक विचारधारा के हैं। विद्वान डॉ. अम्बेडकर ने अपने विद्वतापूर्ण लम्बे वक्तव्य में गांधीजी और कांग्रेस की चर्चा करने का कोई अवसर दिया। यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं है यदि मैं यह कहूं कि इस संविधान में कांग्रेस की विचारधारा का नितान्त अभाव है। जब हम किसी संविधान का निर्माण करते हैं तो हमारे सामने वह कोई राजनैतिक ढांचा नहीं है जिसे हमने तैयार करना है और ना ही वह कोई शासन तन्त्र ही है जिससे किसी देश की सामाजिक आर्थिक भावी नीतियों को तय करना है।

(वही पेज 255)

समस्त विश्व प्रभावित हुआ है

उसी दिन श्री आर.के. सिधवा ने कहा–''श्रीमान् ! आदरणीय डॉ. अम्बेडकर ने एक योग्य तथा परिपूर्ण कानूनविद् होने के नाते इस सदन में संविधान का यह प्रारूप विशुद्ध रूप से पेश किया है कि सारा संसार उससे प्रभावित है।''

(वही पेज 265)

राष्ट्र के निश्चयों के सही परिपेक्ष में प्रस्तुत किया है

उसी दिन डॉ. आर.आर. दिवाकर ने कहा–''इस समय मैं यह कहना चाहूंगा कि ड्राफ्टिंग कमेटी ने केवल संविधान सभा के निर्णयों को ही संविधान के प्रारूप में स्थान नहीं दिया है बल्कि मेरी विनम्र राय में वह उससे भी कहीं आगे बढ़ गई है। मैं यह कहना चाहूंगा कि उसने निर्णयों और निश्चयों का पुनर्वीक्षण किया है। इसने बहुत से निर्णयों को बदल तक डाला है और संभवतः उनका पुनर्लेखन किया है।''

(वही पेज–291)

साफ सुथरा लुभावना खुलासा

उसी दिन बेगम एजाज रसूल ने कहा– ''जनाबे आला! मैं आनरेबल डॉ. अम्बेडकर को उनके हिन्दुस्तानी आईन के साफ सुथरे और लुभावने रूप में खुलासा करने पर उन्हें मुबारकबाद देना चाहती हूं। अम्बेडकर और इस ड्राफ्टिंग कमेटी ने कोई मामूली काम नहीं किया है इसलिये वे मुराबकबाद के हकदार हैं।

(वही पेज–305)

मुख्य शिल्पी डा. अम्बेडकर ने एक आलोचक होते हुए स्वयं संविधान बनाने का कार्य सम्हाला

श्री अनन्त शयनम् आयंगार ने कहा–''लगभग सभी वैचारिक संस्थाओं के नेता यहां उपस्थित हैं– यहां तक कि डॉ. अम्बेडकर भी यहां उपस्थित है जो महज हमारे कार्यों को देखने तथा उनकी आलोचना करने आये थे किन्तु उन्होंने संविधान निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई है और वे इस संविधान के जिसे हम आज अंगीकार कर रहे हैं एक प्रमुख शिल्पी हैं। एक ऐसा व्यक्ति जो हम पर अविश्वास करता था और हमारी आलोचना करने आया था उसने अन्ततः इस संविधान का कार्यभार संभाल लिया और सम्पादन भी किया। मैं उनका इस कार्य के लिये अभिनन्दन करता हूँ।''

(सी.ए.डी. जिल्द 11 दिनांक 18.11.49 पेज–664)

स्वतंत्रता संग्राम में दलित शहीदों की महत्वपूर्ण भूमिका

मुख्य रूप से दलितों के बलिदान की भूमिका सन् 1804 में अलीगढ़ जिले के समीप छतारी के अमर शहीद उदइया चमार से प्रारम्भ होती है। शहीद उदइया चमार छतारी के नवाब के पुत्र रनमस्त खां और रोशन खां ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह शुरू कर दिया था। उदइया चमार ने इन दोनों नवाब पुत्रों ने अपने समाज के लोगों को साथ लेकर सैंकड़ों अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। उदइया चमार ने अलीगढ़ किले के रास्ते में बारूद बिछा रखी थी। अंग्रेजों की सेना का किले में प्रवेश करते समय बारूद के चलने पर बहुत से अंग्रेज मारे गये। लेकिन अंग्रेजों की अधिक फौज होने के कारण उदइया चमार नवाब पुत्रों के साथ कैद कर लिये गये। बाद में इन तीनों को फांसी दी गई। नबाव के तो अपनी धन सम्पति के लिए लड़कर मर गये, किन्तु उदइया चमार ने अपने देश में अंग्रेजों द्वारा हो रहे अन्याय के विरूद्ध अपना जीवन बलिदान कर ख्याति प्राप्त की।

वीरांगना महावीरी देवी

यह मुजफ्फर नगर की बाल्मीकि समाज की थी जिसने अंग्रेजों के विरुद्ध महिलाओं की सेना बनाकर हाथों में बांक कांता, बल्लम, गंडासा और भाले लेकर अंग्रेजों पर हमला बोल दिया था। और बहुत से अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। अन्त में सभी महिलायें अंग्रेजों से युद्ध करती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। इन सबकी यादगार बनी हुई है। हर वर्ष इनकी स्मृति में मेला लगता है। ये दलित वर्ग की महान महिलाएं थीं।

अमर शहीद बांके चमार

बांके चमार का जन्म ग्राम कुंवरपुत्र डाकखाना मछली शहर, जिला जौनपुर में हुआ था। यह बागी नेता हरिपाल सिंह के प्रमुख साथी थे। इन्हें पकड़ने के लिए अंग्रेजों ने 5000/– रुपये पुरस्कार के रूप में घोपित किए थे। बांके चमार ने कई अंग्रेज अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया था। अन्त में खुद पकड़े गये और फांसी पर लटका दिये गये। इनका नाम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर रहेगा। आपने दलित समाज का नाम उजागर किया है।

मातादीन भंगी

मातादीन ने अंग्रेजों की फौज के सिपाही मंगल पांडे को एक ताने के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काया। एक दिन मातादीन ने उसका लोटा मांगा। मंगल पांडे ने मातादीन भंगी के लोटा मांगने के साहस को अपने ब्राह्मण होने के मिथ्या घमण्ड का अपमान मानकर मातादीन को फटकारा। मातादीन ने मंगल पांडे को कहा कि भविष्य में तुम्हारा सब ब्राह्मणपन निकल जायेगा जब तुम गाय और सुअर की चर्बी से बने कारतूसों को चलने के बाद दांतों से निकालोगे। तब तुम्हारा ब्राह्मणपन मिट्टी में मिल जायेगा। तभी से भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह शुरू कर दिया। मातादीन को भी अंग्रेजों ने फांसी दे दी। क्रान्तिकारियों ने विद्रोह शुरू कर दिया। क्रान्तिकारियों को विद्रोह के लिए प्रोत्साहित करने के लिए मातादीन अमर हो गए।

लोचन मल्लाह

यह कानपुर में गंगाघाट के मल्लाहों का मुखिया था। विठुर के राजा बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र ने 1857 के गदर में अंग्रेजों का साथ दिया था। अंग्रेजों को कानपुर इलाहाबाद सुरक्षित पहुंचाने की व्यवस्था 40 नावों द्वारा लोचन मल्लाह को सौंपी गई थी। इस समय लोचन मल्लाह ने विद्रोही सैनिकों का साथ दिया। उसने 80 अंग्रेजों को पकड़कर गंगाघाट से कानपुर लाये। उनमें से स्त्री और बच्चों को छोड़कर सभी पुरुषों को लोचन मल्लाह ने फांसी लगा दी। अपना राज्य बचाने के लिए पेशवाओं ने पहले अंग्रेजों का साथ दिया। बाद में स्वतंत्रता संग्राम के नायक बन गये। इन्होंने ही लोचन मल्लाह को विश्वासघात कर मरवा दिया।

वीरांगना झलकारी बाई

वीरांगना झलकारी बाई कोरी जाति की थी जो झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की महिला सेना की नायक थी। इनके पति पूरन सिंह कोरी, कोरियों की सेना में तोपची थे। झांसी का किला अंग्रेजी फौज ने घेर लिया था। अंग्रेजी फौज किले का फाटक तोड़कर अपने अधिकार में करने ही वाली थी। रानी आत्मसमर्पण करने को तैयार हो गई तो वीरांगना झलकारी बाई ने रानी को साहस और धैर्य बंधाया।

रानी के दत्तक पुत्र को लेकर झांसी के बाहरी दरवाजे से विठूर चले जाने को कहा। स्वयं रानी के वस्त्र, शस्त्र और आभूषणों को पहन कर रानी का रूप बनाकर अंग्रेजों से तब तक युद्ध करती रही जब तक कि रानी विठूर नहीं पहुंच गई। जब झलकारी बाई को यह सूचना मिली कि उसके पति पूरन सिंह तोपची युद्ध में मारा गया तो झलकारी बाई सिंह के समान अंग्रेजों को मौत के मुंह में उतारती रही। अन्त में रानी लक्ष्मीबाई के एक विश्वासपात्र ब्राह्मण सैनिक ने अंग्रेजों को यह बता कर कि 'यह रानी नहीं है यह तो कोरिन झलकारी है' चुगली खाई। झलकारी ने उस ब्राह्मण का तलवार से सिर काट दिया और स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुई।

चौरी चौरा काण्ड के अमर शहीद रामपति चमार

चौरी चौरा ग्राम गौरखपुर के इस हत्या काण्ड का नायक रामपति चमार था। यह काण्ड 2 फरवरी, 1922 को हुआ जिसमें चौरी चौरा

थाने के थानाध्यक्ष गुप्तेश्वर सिंह द्वारा अहीर भगवान दास को गाली–गलौज कर अपमानित करने और लाठियों से मारने पर रामपति ने इस अन्याय के विरूद्ध साप्ताहिक बाजार पेंठ की हड़ताल करने की 5 फरवरी, 1922 को घोषणा कर दी। इस साप्ताहिक बाजार में चमड़ा और चमड़े की बनी वस्तुओं की बिक्री अधिकांश चमारों द्वारा की जाती थी। 5 फरवरी 1922 को रामपति के नेतृत्व में 5 हजार दलितों ने साप्ताहिक बाजार बन्द करने का आह्वान किया।

प्रदर्शनकारी इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए थाने की ओर बढ़े। पुलिस द्वारा भीड़ पर गोली चलाने पर प्रदर्शनकारियों ने थाने में आग लगा दी। इस अग्नि काण्ड से थाना बुरी तरह नष्ट हो गया। 23 पुलिस के सिपाही जलकर मर गये। इस काण्ड के नेतृत्व की सूचना गांधी जी को मालूम हुई कि चौरी चौरा के चमारों ने थाने में आग लगाकर 23 सिपाहियों को जलाकर मार दिया तो गांधी ने इस आन्दोलन का नेतृत्व चमार जाति के रामपति के हाथों में जाने से पूर्व ऐसे काण्डों की निंदा की और अपना आन्दोलन बन्द कर दिया।

इस कार्य के लिए क्रान्तिकारियों ने गांधी जी की आलोचना की। गांधी जी ने अंग्रेजों का साथ दिया।

परिणामस्वरूप सैंकड़ों क्रान्तिकारी पकड़े गये। 272 लोगों का चालान किया। 228 दलित जनों पर सेसन सुपुर्द कर अभियोग चला। निचली न्यायालय ने 172 दलितों को फांसी की सजा सुनाई। इस निर्णय की अपील के पश्चात् 19 दलितों को फांसी 14 को आजन्म कैद, 38 को सबूत के अभाव में छोड़ दिया। शेष लोगों को 8-8, 5-5, 3-3 वर्ष की सजा दी गई। यह निर्णय 23 अप्रैल सन् 1923 को हुआ। 2 जुलाई, 1923 को 19 व्यक्तियों के साथ रामपति को फांसी दी गई। 1924 में चौरी चौरा थाने का पुनः निर्माण हुआ। इसके प्रांगण में पुलिस के मृतक 23 सिपाहियों के नामों का शिलालेख लगाया। सन् 1947 में कांग्रेस की सरकार उत्तर प्रदेश में बनने पर मुख्यमंत्री पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त ने इस शिलालेख को इसलिए हटा दिया कि इनके विषय में चर्चा होने पर दलित वर्ग के क्रान्तिकारियों के बलिदान और वीरता को भी शिलालेख में उजागर करना पड़ेगा। इसलिए स्वतंत्रता संग्राम में दलितों के योगदान को दबाने के लिए ऐसा किया गया।

शहीद ऊधम सिंह

जलियावाले बाग हत्या काण्ड के नायक अमर शहीद नत्थूराम धोबी, मंगलराम मोची और दुलिया राम धोबी दलित वर्ग के क्रान्तिकारी पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर माइकेल ओ. डायर के आदेश और जनरल डायर के हुकम से सैनिकों द्वारा गोलियां चलाने पर सैंकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों के साथ बलिदान हो गये। इसी समय 19 वर्षीय युवक सरदार ऊधम सिंह दलित वर्ग के क्रान्तिकारी ने 14 अप्रैल, 1919 को प्रतिज्ञा की कि वह जलियावाले बाग के भीषण हत्याकाण्ड का बदला जनरल डायर की हत्या करके लेगा। ऊधम सिंह ने 21 साल के घोर संघर्ष के पश्चात् अकेले ही दुश्मनों के घर लन्दन में जाकर 13 मार्च, 1940 को गोली से जनरल डायर को मार दिया। इस कार्य के लिए ऊधम सिंह को 31 जुलाई, 1940 को लन्दन में फांसी दी गई। यह शहीद ऊधम सिंह भी इस पक्षपात पूर्ण वातावरण में उचित सम्मान न पा सका। यदि यह उच्च वर्ण का होता तो देश में अनेक स्मारक और प्रतिमा लगाई जाती।

बड़े साहस और धैर्य के साथ माननीय मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने रूद्रपुर तहसील उत्तर प्रदेश के नाम को बदलकर ऊधमसिंह नगर बनाकर उस महान स्वतंत्रता सेनानी को ऐतिहासिक बना दिया।

जिन महान दलित विभूतियों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने में भारत सरकार में अपना योगदान दिया उनमें भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, बाबू जगजीवन राम और दामोदर डी. संजीवैया जी के नाम प्रमुख हैं। •

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के भावी कार्यक्रम

1. **41वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन**
   12-13 दिसम्बर, 2025
   पंचशील आश्रम, झड़ोदा (बुराड़ी) दिल्ली
2. **भारतीय दलित साहित्य अकादमी, शाखा उड़ीसा प्रदेश**
   प्रादेशिक सम्मेलन-सम्बलपुर (उड़ीसा)
   21 सितम्बर, 2025
3. **भारतीय दलित साहित्य अकादमी, राजस्थान प्रदेश**
   प्रादेशिक सम्मेलन-7वां दलित साहित्य-दिवस समारोह
   5 अक्तूबर, 2025, जैसलमेर (राजस्थान)
4. **भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उत्तराखण्ड प्रदेश**
   प्रादेशिक सम्मेलन, 15 नवम्बर, 2025
   गोपेश्वर (चमोली) उत्तराखण्ड

आप सादर आमंत्रित हैं

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर-*राष्ट्रीय अध्यक्ष*

प्रो. जय सुमनाक्षर-*राष्ट्रीय महामंत्री*

मो. 9810278936 - 9891989175

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ◻ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 Email-sumanakshar@ymail.com

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009